

9267	ASNA ARCHIVES
9267	

गस्तोहो ६१ कुदेईच कु शतिन कुमाय्य कुमदितः
भा कुइमं यकु मो ज्मा यवज दोत्येइस

सम्म लालना गरि हो रालाई राखनु दसवर्ष भयापछि ताडना गरि राखनु सारवर्ष भया
पछि हो रारमीत्र वरोवर गरि राखनु पर्छ ॥ २१ ॥ लालना बहावो दोखा तादना बहवो
गुणा ॥ तस्मान् पुत्र च सीवे च तादयत् न तु लालयेत् ॥ २२ ॥ लालना गन्या पछि व
हीनै दोष हुँदा ताडन्या गन्या पछि कहिँ तै गुणा हुँदा तसर्व पुत्रलाई रसीधेलाई लालना
गरि न राखु ताड गरि राखा पछि बहुत गुणा छ ॥ २३ ॥ रुचिरभ्यासये स्या ता प्रज्ञाय
की प्रयो जन ॥ ताबुभो यदि न स्या ता प्राज्ञायी की प्रयो जन ॥ २४ ॥ कसेको
भयापनी बीया पठुनु रुचि छ अभास पनि हुँदा बुद्धि न भयापनी जान्या होला रु

चीपनी हैन अभ्यास पनी हैन बुद्धि ले शास्त्र मा केहि प्रयो जन हैन २३ पुत्रा रुचु वी
वीवीधै सास्त्रैः नीयो ज्या सतत बुद्धेः नीती ज्ञा बुद्धि संघा ना भवती खखल पुजीता २४.
द्वे राकन अनेक शास्त्र को दिन दिन प्रती अभ्यास गर्नु लाउ सोस्त्र नीती ७
द्वि वं न भया पदि सवै ले सा न्या उ जगती तसर्थ द्वे राकन कीया पदनु
पद २४ यठ पुत्र की माल स्य मपठा भारवा हक : पठ पुजीतो राजा पठ पुत्र
दिन दिने २५ : चानक न्य मीले : आफनो द्वे रा लाई सि का उ छन पुत्र शास्त्र प
ठ आल स्य छा उ शा स्त्र न पद्या भारि वी कनु पल शास्त्र पद्या पदि राजाले पनी पूजा

राम.

राम
६

जल तस्कारणादि को न को दिन सास्त्र पठनु अभ्यास गनु पर्यन्त नी आकर ना हो
ए लाई सी काया ॥ २५ ॥ गुण युक्त ये ता पन्न की मा ठो पैः प्रयो जर्ण ॥ वी की य ते न
घरु भीः गा व र्षिः खी व र्ज ति ॥ २६ ॥ गुणाली नु काम गनु नी मी त्त जन्तु गनु र्प
ह सो भा गरिः व स्या ले क्ये प्र यो न दैन क सो भ न्या दु द णा दि न्या गा ई ह रु ला ई ठै र ग
ह ना धै न रा वि वे च ण ल ग्ग प नी मो ल जा द्रे नः त स ते जा न्नु ॥ २६ ॥ न र स्या भ र
णै रू पं प स्या भ र णै गु णै ॥ गु ण स्या भ र णै ज्ञा नं ज्ञा ण स्या भ र णै क्ष म ॥ २७ ॥ म नु
ष्ये को आ भ र ण रू प हो रू प को आ भ र ण गु णः गु ण को आ भ र ण ज्ञा ण ग्या नं

सुखि श्री अक्षर ह — मारना जंगल राम लोह वद माल

शुद्धि

को आभरण भेमाहोः २१ : गुण पृष्ठ सिमा रूप शिल पृष्ठ सीमा कुल : सिद्धि पृ
ष्ठ सिमा वीद्या भोग पृष्ठ सिमा धन : २२ : गुण सोधनुः रूप सोधनुः शिल सो
धनुः कुल सोधनुः सिद्धि सोधनुः वीद्या राशोधनुः भोग गर्द की भनी शोधनु
२३ : अगुण स्प हतै रूप असिल स्प हतै कुल : असिद्धि अहता वीद्या
अभोग स्प हतै धन : २४ : गुण हन्या मा ह्य को रूप को श ह्य : सिल न ह्य
को कुल राश ह्य : असिद्धि भया पदि वीद्या को नास ह्य भोग गर्भ न स क्य ध
रा को श ह्य : २५ : गुण भुवा यत्ने वीद्या रूप शिल भुवा यत्ने कुल : सिद्धि

जंगल राम लोह वद माल

२८

गदसीः ॥ ३४ ॥ अम्पा शगारिक न गया पछि हंजार जो जन की मीला जा
न नृणा गया पछि गद दले एक पाउ अधिन रा धिकन बलन सक केन
॥ ३४ ॥ शनै रथा शनै वीद्याः सबै परवत मारु हा ॥ ॥ शनि धर्म श्व का ससन
श्व व्यायाम श्व शनै शनै ॥ ३५ ॥ धन तुल्या उदा माः विद्या पद्म दामाः पर्व
त च ठा दामाः धर्म गदार्माः व्यवहार गदार्माः येति बो कमाः हत पत ले का म हु दैन
विस्तार गारिगनु पर्छ ॥ ३५ ॥ गुरु सुश्रु श्रु यया वीद्याः पुस्क रेण धनै नेवा ॥
अव्यवा वीद्या या वीद्याः चतुर्वेनी पल मे ते ॥ ३६ ॥ चार प्रकार ले वीद्यालीनु

शुद्ध

ईद कि गुरु की चाकरि गरिकन वीद्या पहनुः पुस्क दिक्कन पनी पहनु धरा
दिक्कन पनी पहनु वीद्या दिक्कन पनी वीद्या लीनु पार्छः ३६ एकक्षर प्र
दातारि यो गुरुणी भीमनीत्ते . श्वानयोनी सत्त गत्वा चाराडाले छपि जा
यत्ते ३७ एकअक्षर सिका उन्पा पनि गुरुमनी मानु पार्छ नम्याया
पछि कुरुको पानी मा सतवरस्स जन्म भैकन फेरि चाराडाले को छ
मा जन्म भैक भैगनु पला ३८ पुतक प्रत्ययो धित्तना धित्तं गुरु
सन्निधौ नशा भन्ने समा मध्य जाल गभ इति विषे ३९ पुस्तक

शान्ति



कमामात्र हेरि कन पहि गुरु देउ नप ह्या पहि शोभा मा शोभा हु दैनः
जार देवी नीस क्का को जार पुत्र जलो ऊँ छ ॥ ३८ ॥ शिल्प शैल मनान
स्यः पिट्रित्य मित्र सै ग्रह ॥ अचोर हर त्ये वीष्ठा पयै ते अभयो नीधी
॥ ३९ ॥ काठ को वेपारि दुंगा को वेपारि बर्च सच नु अभ्यास आलस्य
नगर्गु पैंडित हुन मीत्र संग्रह गनु यती चोर ले चोरि कन ले जानै नये
ति पाच थोक अक्षय भंड रहो ॥ ४० ॥ तहि जन्मनि जेव त्वं जेव त्वं
गुण उच्य ते ॥ गुण गुण तरि योती पयो दधि घन पया ॥ ४० ॥

शुद्धिचा

१०

जन्मजेवलेजेवढुदेनजेष्टमनकोगुणहोकरसोमन्यादुददहिमायि
उश्रेस्तजसोहो ४० किंकुलेनवीशालेनगुणवान्प्राजितोनरः

धनुर्वशविभुद्वेपिनीगुणाकिंकरिषेती ४१ गुणजाननम
पापीहदुलाकुलमाजन्मलीनुपदेनलोकलेगुणालाईमान्यागर्हन्गुणम

पापिधनुर्वशराजाकायेराभयापनीक्यागुर्नुईह ४२ किंकुलेन
वीशालेनवीद्याहिनस्तुयोनर अकुलेनोपीवीदासोःदेवतैर्कापीपूज्यते

४३ वीद्यानभयापापिहदुलाकुलमाजन्मभयालेक्याप्रयोजननीचा

राम

१०

कुलभाजमभयापनीपैण्डितज्ञानीभयापदिदेवताजैलोकसबैले
पूजागर्ला ॥ ४२ ॥ नार्वाव्यक्तिचभवेदोद्यायावत्तुपारंनगद्विती ॥
उत्तिनेचगतेपारंनौकीयाकिंप्रयोजन ॥ ४३ ॥ वीद्यारनाउप्र
कैद्रनपारनईज्वालचाहिहसमुद्रपरगयापदिनाउकोक्याप्रयोज
नह ॥ ४३ ॥ गुणाः सर्वत्रपूज्यंतेपित्तवैशोनीरव्यक ॥ वसुदेवमूर्त्तिव
सुदेवनतेजना ॥ ४४ ॥ सबैलेगुणाकोपूजागर्हन्होएवावासमबरोवर
रहुदैनगुणभयाकाओकललाईसबैलोकलेपूजागर्हः वसुदेवला

उपिच्य

११

दलाईकोहि पूजा गदैन् ४४ गुणाः कुर्वन्ति डरेत्पि डरेपी वसतासता
केतकी गंधमा धार्य स्वयं गतीः क्षति वत् पदा ४५ गुणा वत्त मानी
सुठाठा भयापनी सज्जन मानी सह जाहन् केतकी फुलका वासणा
लेठाठा भयापनी भ्रमर उसे ठाठु भा पुग्द छन् गुणिक माणि स सग ठाठ
भयापनी लोक सवै जाहन् ४५ : वीद्या त्वि च न्यप त्वच नहि तुल्य प
राचम् स्वदेशे पुजीतो राजा वीद्या सर्वत पुज्यते ४६ राजा वी
विद्या वत्त इडवै तुल्य इदैनन् आफ्फोदसिले राजा को पूज गन्हन् सवै लोक

राम

११

लेवीया को पुजा गर्हन् ॥ ४६ ॥ एकेना पीटु पुत्रे रावीया युक्ते नसा धुनी ॥
कुलपुरुषा हि हेन चन्दे नैव प्रकाशयते ॥ ४७ ॥ एक यो रा भया पनी ॥
व सुपुत्र वीया वंत्त साधु पुरुष ते सो दो रले कुल को प्रकाश गर्हन् ॥
४८ ॥ विद्या या भाजन कस चीत् कस चीत् स्व सभाजनं उभयोर्जनक
भ्यि च कश्चि त्तो भय भजनं ॥ ४९ ॥ कसे दे उ वीया दुइ कसे दे उ वीया पनी
धन पनी दुइ कसे दे उ वीया पनी धन पनी दुइ देन ॥ ५० ॥ नमस्ति फली
ना वृक्षाः नमंती शुणी नो जरा ॥ सुखा तं च मूर्धं च भीयते नैव सन्यते ॥ ५१ ॥

बुद्धिचा

१२

कुल ईन्पाखर शुणिक जनतानस्रभैरकनवसदखन सुक्याको काठर सुर्वः
मीनीस्र भाची जान्छन नम्रहुन ४६ नहिकर्मणि चत्वारि संध्या काले प्रयो
उभ्र आहारे मै धुननीडा साहज तथा स्वाध्यायमेव ५० योचाकर्म
संध्याकमल मागनुहैनः आहार मै धुननीडा साहज जैन मानीस्र लेर्गति यो
मानीस्र का आयुहि भौन्न मै जाला ५० आहार जायते व्याधी गमाकिर
श्व जायते अलक्ष्मी कभ्य सज्याया सपाठा दायु वक्षये ५१ योचा
र काम संध्याक ल मागनुहैन आहार गयो भन्या व्याधि वढ दहन मै धुनगाग

राम

१२

संकीर्त २ उच्चमसाहबलबुद्धि पराक्रम हेतुगुणभयाकोमुनेषे
देवताजस्तोहोतसमनुष्यदेवीदेवतापंडितार्थवत् २ राजाध
र्मणीधर्मज्ञपापेपापसामागमं राजानंदुर्निकृतिस्मात्प्रव्या
राजातप्रथाप्रजा ३ राजाधर्मात्माभयाप्रजापनीधर्मात्माईह
राजापापीभयाप्रजापनीपापीईहसत्थराज्ञोलेधर्मगर्नुआहि
ह ३ साम्यदानेराभेदेनक्रमेणचबलेनच सर्ववस्तुसहाशत्रु
घाटनीयोरागधीप ४ सामदानभेदक्रमबलगरिवस्तुलाइपनी

बुद्धि
२४

राजा लेना चुकोणा श गर्नु पर्दः ॥ ४ ॥ पात्रे त्यागी गुरो सगी भाग्ये प
रिजने सह शास्त्र बोधारण पोधा नृपते पंच लक्ष गां ५ पात्रमा
हेरि त्याग गर्नु गुरा देखी सुसु हुनु आफ्ना परिचार सर्वे बाहुलो
भैकन मानु शास्त्र जानु रणमा सुरे हुनु । देखी राजाको लक्ष रा हो
५ उत्तमः प्रीण पातेरा सुरे भेदेन यो जयत् लब्धं सर्व प्रदाशेन
समस्तुल्य परा यक्रम ६ वज्र मनुष्य लाई राम स्कार गरि हात
लोनु पराक्रम हरि सुरा लाई हात लनु धन दिक्कन लोभी लाई हा

राम
२४

लतली पराक्रमे हरि कृष्ण ज्यो कार्य लेभया पनी हतलीनु ६ नात्महि
इपरे वीया वीयाहि द्वि परस्प च ॥ गहेत कुर्म ईवां जानी परभावं चलक्षये
त ७ आफना दुख अकाकन कहनु अकाको दुख आफुले छुताई दि
नु अकाको दोषका कुरा गुण गरि राखनु ८ मन साचित्तयेत कार्य व
चसाण प्रकाशयेत मंत्र लक्षणा गुण तात्मा कार्य सिद्धिश्च जायते ९
केहि काम सा पनी मन मा मात्र चीता उनु मूरव ले प्रकास रागनु मत्र
३ गुण गरि राखनु रसिद्धि १० उपकार गहि तेरा शत्रुणा शत्रुम्

पुष्टि

२५

दूरत पद लगन कर सै रा क रा ठ के नै व क ठ क ६ उपकार ता शत्रु ले ग म्या
पछि ई छ क सो भ न्या का ठा को बीया को का ठे ले जी का न्यु न् ६
बहे द मी त्रिं स्कंधे राया वत्त काल वी प य र्य तथै व मा गते काले बीया
घट सी वास मनी १० आफ् रा वी पती मा शत्रु पनी का धा मा च हाउ
नु प र्छ आफ् रा का म स क्या पछि या स को भारि मी का या को ज सो मी
ल का उ नु प र्छ १० हे जी को क दु क ह्ये हो म धुरं की न्द्र भाव से म धुरं व
दं क ल्या नी लो को यं म धुरं प्रीये ११ हे जी का म धुर व च रा वो ल छि च

रा ४

२५

रोवचनरा बोल कसो भन्या मधुर वचन बाल्या सबै लोक को पीया
एक ११ जीका गेवसल लक्ष्मी जीका गेमीत्र बांधवा जीका
गेवधारी सचापी जीका गेमरणी कुरव १२ लक्ष्मी पनी जीका
भाका दुपा मावस्या की छनू इ एमीत्र पनी जीभा मे छनू मरणी बंध
रापरि जीभा मावस्या का छनू १२ प्रिये वासक्य प्रदानेरा सर्वतु
व्यती जैतव तस्मात्ते देव ज्ञातव्यं किवाके पीद रिदता १३
पीया रोवचन बालनु पीया रोवचन बाल्या देखि सबै लोक सुमि दु

शुद्धि
२६

इत्तसथले वचण को दरिदर नुछेन १३ अग्निदोगर दध्वेवडा
स्व पाणिदुं नापहा क्षत्रदारा पहारि चवेडे ते आत्तायीगा १४
आगास लकाउ न्या वीख सुवाउ न्या अर्काको प्राण लीन्या शस्त्रले
अपयातजर्न्या वीर्ता हरिलीन्या परस्त्रि गमण न्या ये तीछ जनालाई अत्त
ताईमन्नु १४ ॥ आत्तायी मायात मपि वेदा सपारग जीघान्
सत्त जीघान् सियान् नते रा कुल शम्भवेत् १५ यो छ जरा चत्तु
वेद मा पारग या का वास् राभया पत्नी आत्ताई ज न्या पद्धि मा

राम
२६

या पनि ब्रह्म हत्या पापल जन्मा छेण १५ ए बु पाल येत नीत्यंस
त्यधर्म परा यण ॥ शिजीन परसेन्या नीपती धर्मण पाल येत
१६ एजाले सदा सत्यधर्म गरि ए ज्य पाल णागर्नु शत्रु लाई जीती
कणधर्म ले प्रजाको पाल णगर्नु १६ पुष्प पुष्प बीनीती तैम
ल छे देण का रयेत ॥ मालाकार ईबी गानिः येव्या जाणा ती सार
तां १७ एजाले मालीनी जस्तो ईउपई प्रजालाई ठेरे दंड णगर्नु
अनु सार हरि ईउ गर्नुः कसो भन्या मालीनी ले रुख अनु सार हे

बुद्धि

२७

रि फुलती पनु पर्दः धेरै फुलती पीरु वस्मेतः उंवे ल्याभन्या पथिः
लाई ह्वैरा तसे राजालेः अनुसार हरि डंड गनु पर्द ७७ अली
मित्र सुदासि रांमथ्य सस वीरो गुरुः ॥ योन बुद्धिती मदात्माशच
सर्वजगत्पती ॥ ७८ योशत्रु यो मीत्रयोः उदासि यो भये मयो ज्ये
ह यो गुरु मनी जानि व्यवहार गनु शत्रु मीत्र को वीचार नराव
न्या मानी सु रां सिंद ७८ अराय वकर तारं अनाथ कर रह प्री
यः ॥ आतुल सर्व भक्ति चरण सिधु वीण शयती ७९ आम्हानी

राम

१७

एहं हरि खर्य जन्म एतान् भया का देस मा जग एतन्म एगि डी दा मा शवे
धोक वान्या ऐती जाना मानी सूचा देना शिंन्धू १२ क कालका
नी मीत्तनी को देस को व्ययु गमः क स्या है का च मसक्ति शिती ची
ता सुई सुई २० कालभन्या को क्या हो देस भन्या को क्या हो लाभ भ
न्या को क्या हो मेरे सामर्थ क्या हो भनी वारं वार मन मा चीत्त एतान् जन्म
२० सिंह दे के व का दे के शिष्य चन्यारि कु कुटा वायसान्पः
च शिष्य ते वत्त गुण स्थिति गर्दभात् २१ सिंह को प्रक गुण

उपि
२८

लीनुः वकुलाकोरेक शुणालीनुः कुषणदेउ चार शुणालीनुः कागको
पनी शुणालीनुः कुकुरदेउ शुणालीनुः गैगाथैतीन शुणालीनु
२१ प्रभृतकार्य मल्यकायो नरः कर्तुमीदृती सर्वाभेष्टतत्का
र्यसिंहदेकवीथीयेते २२ केहिकार्यगयापनीसीदुनगारिनेह
दुनयेती शुणसिंहदेउलीनु २३ इन्द्रियानीतुसंमेप्रकंकक
वत्परिउतो नर कार्यकोरेप्रपन्नानीः सर्वकार्यीणि साधयेत्
२३ बहुलागैराणि मनुष्यलेः आफ्ना कार्यसिद्धनहुं जालसम्मा

राम
२८

ममसा त्तमैरुनु का जेकोः औसरपया पछि सवैका जेको साधना गर्नु यो व
कुलाको गुण लीनु २३ प्रागुठातनं वयु। द्विचसवीभागी चवन्धुयु
सियमा कस्यं भुजी तसि वेष श्रत्वारिकु कु तात् २४ प्रातैकाल मा
उरु शशुसित मुकु गर्नु आफना दाजु भाई वरेवर देवगु स्वास्नि केव
पकेटिना तुलो गरि खानु येती चार गुण कुबु रा कुबु रा को लीनु
२४ गुटमै भुण गुप्प गनु बला हरि सग्रह गनु दाजु भाई संग
रुनु भ्रं हंकारि नदुनु भर्त्तु कुनु येती पाच गुण का गको लीनु २५

शुद्धि
२२

शुद्धिमेव न दृष्टं काले शुचालसंग्रह ॥ अप्रमादि सुधुत्तं चपचशीर्ष्य
चवा य सात् २५ ॥ वक्राशीचा ल्य संतुष्ट सुनिहा शीघ्रचेतन ॥ स्वामी
भक्तश्च श्रुलश्च वेत्ते स्वागतो गुणा २६ भयाटे रैषान्मानमया स
तो वमान्या चोदो र्गान्या आफना स्वामी को मकी गया सुरा क्रिया यतीष्ट
यो क कुकु रेको लीनु २६ अवी भ्रातं वहेत् भारं शीतोर्ध्वं एव बीदति
सुसंतुष्टो भवेत्तत्तं शीण शीघ्रं च गद्गतात् २७ नवी शाईभारिवा
कन्यातोतो बीसो नमान्या ओरै भया पनी संतोष प्राप्ता हती गुण गदा

राम
३६

होकोलिनु ३७ विशन्तेनाः गुणाः प्रोक्ता यस्तु कुम्या हवीचक्षणाः जयिष्य
तीरिपुसर्वा नृसजयश्च भवीष्यती ३८ येती २० गुणा जसमनुष्यले
ली याका हनु योवीचक्षणा मनुष्येश्च कोना शज ह जा हा जयो जीती
आउह ३९ अमरुयो मनुष्याणां मनुष्यैत पचेतसा ॥ परस्परपका
णा पुसा भवती वी ग्रहं २० ज्वाणि मनुष्य हरु आफता मनवे दुख आ
फने मणमा माव रा हनु परस्पर पर उपकार गीर साधु मानो सृज्ज
डा गदेनेन २१ ऐको दरा मव्य ग्रीवा ये चरिता महा रावे असा

उद्धि
३०

धिनावीनशपतीभैरुं डाइवपक्षिणा ३० दुईकपाल ऐकमेत भषा
कोभैरु राज पछि समुन्दु मावसदछन् ऋगञ्ज ज्योभन्मा सरि जान्या छत्त
सर्व आणु आआफुसित्त ऋगञ्ज रागन्तु ३० वसने सति कर्त्त
येणकेनापिसहती ॥ ऋक्षबानरेंगो पुढे पुरायसरथी यथा ३१
वीपती पया पछि साना जातछे उपनीभजणा गरिकण तानु पछि कसे
भन्मा श्री राम नन्द कण वीपती पर्दावानर मालकभालु सायमा
लीलका साय्या व्या ३१ दुद्धरं साजरीतीर्णः समग्रबानरैर्वलं

राम
३०

अथ पञ्चमः प्रश्नः ३२ अथ पञ्चमः प्रश्नः ३२
नो का जगत्संस्तुतुं वा न संप्रदायः ३३
३३ अथ पञ्चमः प्रश्नः ३३ अथ पञ्चमः प्रश्नः ३३
अथ पञ्चमः प्रश्नः ३३ अथ पञ्चमः प्रश्नः ३३
अथ पञ्चमः प्रश्नः ३३ अथ पञ्चमः प्रश्नः ३३
अथ पञ्चमः प्रश्नः ३३ अथ पञ्चमः प्रश्नः ३३

उद्धि

३९

राज्जु भाई कत्ती जगग गछौ तैपनी नीद रा मा आफना आफने ईदवा
रनु बीराने ईद ३४ चीता ज्वरे मनुष्या राणि आस्वानामै धुन ज्वर
आसो भाज्य ज्वर स्त्री राणि वस्त्रा राणि मात पो ज्वर ३५ मनुष्य को
ज्वर चीता हो घोश को ज्वर मै धुन हो स्त्री को ज्वर असो भाज्य वस्त्र को ज्वर घो
म हो ३५ आध्या जग मनुष्य राणि मन ध्या वाजी ना जग अ धुन
जग स्त्रि राणि अस्वानामै धुन ज्वर ३६ ठैरै शिष्या को मनुष्य को दो
बुटो ईद नहि दाया को घोश ना रै बुटो ईद सभा जन पा सास्त्रि चोरे

राम

३९

बुटो ईद्वे मेथुन जन्मा पद्धि घोडा चाडै बुको ईद्व ३६ कष्टावती पण्थी
नकष्टावासा नी ए आया भूत युवधि सयक्तः सर्वे कष्ट दारिद्र्यता ३७
अर्काको रिन भै र ह्या पद्धि कस हो आ आ मन दुन्या मनुष्य कनई
न्या मनुष्य कन पण्ण कष्ट हो आ आ मन दुन्या मनुष्य क दुनुपन
कष्ट हो अधिको महा दुनी पद्धि कै गाल भया पनी को तोपनी ब
दो कष्ट हो ३७ अविर्तो बाधितो सुख प्रावासि परसे वक् श्री
विज्ञो पी मूर्त पंच पंचै ते दुख भागीना ३८ सदा धन तुल्या उगाका

उदि
३२

सुतो जन्मा सदा का ले रोगी भया को मूर्ख भया को सदा पर देशि अर्काको
चाकारि जन्मा रेती पाचा जीउ दो भया पनी मन्मा का तुल्य ईन् ३८
यो पात्र नित्य माया ती भूत चापी दिने दिरो । सत बल धुता पाती यदि
शक्र समान ३९ अर्काको घरमा सधै बाया जन्मा पाछु हलु काई ह
इन्दु तुल्य बदा भया को भया पनी चा दो ना शि ह ३९ पगर्न परवस्त्र
चपर पाणपर स्त्रिये ॥ परस्त्र च गेहवा स शक्र स्पापी भ्रा यह रत्न
४० अर्काको अन्न बाया अर्काको वस्त्र लाउ न्या अर्काको स्त्रि गम

राम

३२

राज्याः अर्काको घरमा वास गया येस्ता मानीसु इत्युल्य भयापनी
लस्मिहरण ईद्वन् ४० ॥ अशा चो नि दुनो बीक्षन् अशा चो पु
त्र वारन् अशा चो बीद्याधवानारि पुत्र पौत्र प्रतिदिता ४१
ग्वाणिभयाका शास्त्र जात्याधनधौ भयापछि त्या मानीसु असु
ची ईद्व सताननभया पछि पुरुष असु ईद्व हो रानीभयापनी
स्वामी दैनभन्यात्थोस्त्रि असुची ४ ४१ विभाग वास नेश
ज्यतेनशरि रानी देहिन चा राजिलो पिनर भे श य स्पर्ति वीष्ट

५
३३

एथगां ४२ सबैलोकले धनको मान गछ मनुष्य कन
को हिमान्या गर्दै रानु माहा जगा धनी भया ता चाण्डलका
भया पनी पुजा गछन् ४२ धनमाहं परं धर्म धनै स
वे प्रतिष्ठित :: जीवन्ती धनी रोगा लोक मृता यत्वा धनानरा
४३ धर्म भन्याको पनी धनै लेई छ धनै ले सबैको प्रति

राम
३३

जाई दत्तसर्वजो मनु व्यथनीई दत्तस लाई जी उ दो मनु नीधनी
भयो भयाते स लाई मया को मनु ते सै ले अरु लाई जागि म
नु व्यले हेला गनु हैन ४३ अती सं पदस मा पन्न भूत व्य
पत्तनात्तभये ॥ अतु वशिखलारुदास त्रयजगा पानी ता ४
३ अती धन भयापनी बहूत सर्व अलगो पर्वत भयाप
नी वज्र पातई दत्तस को हि कुरा मा भयापनी नी अये ले वस्त्र
न ४४ सर्व कर्म सो भक्ष को नित्या को सब खानी को गिना

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ २ ॥
अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ ३ ॥
अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ ४ ॥
अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ ५ ॥
अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ ६ ॥
अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ ७ ॥
अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ ८ ॥
अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ ९ ॥
अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ १० ॥

३६
॥

३७

खयो ॥ ४७ ॥ अर्काको बस्य बस्य पयोभन्या सुख भयापनी दुखे भन्नु
आफना वसा मार रुनु दुख भयापनी सुख भन्नु सुख दुख देखी ले
४८ सुख स्थानै तरै दुख स्थानै तरै सुखः सुख दुख भन्नु
घ्याणी जेक वत्त रिभु म्येते ४८ सुख का अंतर मा दुख हुँदुनु दुख
का अंतर मा सुख हुँदुनु मनु बेकन सुख दुख बेगवर चकार कीया को
नलो ४८ बहू श्री मूर्ख सचा तेर यो न्ये पशु बती भी छार अंती
गुणा सबान् मेधै रिख दिव कर ४८ सुख सेव धेरै भया का ठाउ मा

शुण्णशारिणकनश्रीसुयलाइवादलेहोपूयमैहोपदखन् ४९
 असत्तासहसंजेनकोयात्पाधमाज्ज्नी पयोपिमोशिडनीहजेमय
 मित्तभिधियते ५० कुजातिसंगसंगतभयापहीभलोमानिसपनिकुजातवोलाउह
 मुडितिकाघरमाउदपियापनिमदेखायोभतिभरुहन् ५० असत्तपयकदोखेराअ
 धमायातिसाधव मार्गेयुतिमिरस्यकसमोपिविसमायते ५१ असाधुसितसंगत
 भयापहिसाधुपनिअसाधुईहकसोभन्याअधारेलेहोप्यापहिसम्मवरोपनिविसम्म
 देखिहन् ५१ उत्तमेसहसंजेनकोनयातोसमुन्नतो नृद्धात्तगानीया

॥३५॥

॥३५॥

॥एम॥

॥३५॥

प्राप्ते गृहिते कुसुमे सह ५२ भला सितस गगना पद्धि पूर्वपनी भलो ईद के से
भन्या फुल सित घास उनी दिह उनी देवता का कपाल का मारंछ ५२ कि करि
व्यती सपके सो भावो दुरती कम यशा सफल मा भव्यो कष्या घा ना ल म ता गती
५३ भला मानी सको संग भदा पनी सो भाव कु दौने आप भित्र को को रला
ईद ईद तले सो भाव कु दौने नू ५३ सक राव सबेने मध्य नि म्व प्रतीदिता
मधु सीर समा रीष्टी म्व कि मधु रायेते ५४ सब मानी सरो पनु डर महस
छुतै पनी नी मती तै ईद त सर्व मानी सूको स्व भाव फिरेने ५४ पुष्ट के पु

यथादीया परस्मैपदं काया काले यमया प्रमोदीया ममपदं ५५
उ ह क मालेया कोदीयाः अका को मया का एन का एन य प मा का एर मा
का मलादेव ५५ इर ला दी य मी वा नि मी ख ले स य वा एवा कि पु दी य न
क रं य म ए री मी दी म म ले ए र ता को प र ले र म म वा को मी री को री
प यो ज न है न दी म म ले ५६ अर या ई स पु य मी इ र हित प री क वा र एवा
का मा यो र ए म म प का प का ले मी प मी र मी ५७ र न मा को ए र ता मा री मी
का ज मा पा र्दे मी म मा म ले या का दी य का री का म मा मा री म ५८

प्रज्ञावचनहिनस्य स्महिनस्येयानर नीरर्थातनातस्य भस्मन्या इति यावत्

५८ अज्ञानी वचनहिन भयाका कस्मले हिन भयाका जी-उन्नुमानी
सर्व्वे हो कसो हो भन्या वरणी माधि उहल्या जस्तो हो ५९ खाय गय

द्वै-अखि आरुंदं पत्यो कलहलाथा चत्वारि स्फूर्तं यांती प्रभाते मेघा इव

६० बाक्राको पुष्टु-अवि आरु प्रातकाल मा भयाको मेघ रिच पुष्टु
को कलह शमाग मात्र पनी रहै रैन ६१ अहिरण्य मद्र शिकै ग
हं गोरं सर्व जीत प्रती कुल कल वैचन कस्या पणविधी ६२ दोलथ

शुद्धिच

३७

नभयाकोदासदासिनभयाकोगाइकोडुदरहिष्यनभयाकोघरसधैक
लहमावगारिरह्यास्त्रियेकनरकभन्नुतेहिहो ६० सुतजंघायदा
रामालक्ष्मनसदगामिनी चनकेशियरासितातदातेडुखभानगी
नी ६१ दुलोजाघश्रीरामचंद्रकोलक्ष्मणकोहाडदाभाशब्द
हुन्याशिताकोचनधेरैलामोकेसूयसोहुन्यालेसबैलोकहुःखभा
गीहुँद ६१ नीस्फलकूपणसेवानीहलारतीचातुरे देखसँ
पुक्तशिलस्याभ्रातीप्रपला ६२ कृपनीकोचाकरिगेगीकोमैधु

राम

३७

२

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
श्री कृष्णाय नमः ॥ २ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥
श्री कृष्णाय नमः ॥ ३ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥
श्री कृष्णाय नमः ॥ ४ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥
श्री कृष्णाय नमः ॥ ५ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥
श्री कृष्णाय नमः ॥ ६ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥
श्री कृष्णाय नमः ॥ ७ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥
श्री कृष्णाय नमः ॥ ८ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥
श्री कृष्णाय नमः ॥ ९ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥
श्री कृष्णाय नमः ॥ १० ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

बुद्धि

३८

यापनी अमृतलोभी दी घाली नु साना कुल मा भयापनी स्त्रिरत्न
ताली नु ॥ ६४ ॥ कस्य दोष कुले नास्ति व्याधी नाको न पीडित ॥
कनकव्यसनै प्राप्य श्री यंकस्यानी रतरं ॥ ६५ ॥ कस्य कुल मा दो
ष ये नरे गनला गया को कसालाई छुट खन पया को छल क्षमि
भिर कस्का घर मा छ ॥ ६५ ॥ दोषो प्यासि गुरो प्यसि नी मुनि
वपि जंतु ॥ सुकुमालस्य पयस्य नालो भवती ककश ॥ ६६ ॥
सर्वे का दोष पनी हु छ गुण पनी हु छ वे सक मल का फुल माना

रत्न

लवभोईछतसतौहो॥६६॥ अमनेशि शिरेवैन्हि अमतक्षी
रभोजनै॥ अमतंगुणावतीभाष्या अमतंवालेखित॥६७॥ ग
डाको अमतभन्याको आगेहोखिरवानु अमतगुणाकी
ह्वि अमतहोवालवकावचरापनी अमतहो॥६८॥ इह
भाषाकृतीवाशिदुखमस्तुभेमाप्रभु॥ दुखमश्चसुहृत्तारि
दुल्लभं वचनं प्रिये॥६९॥ जोग्यकुरावसेमावन्नराजाहितकी
ह्वि प्रीयेवचनदुलभहो॥७०॥ नदिनांयाहावीभेपानारि

ॐ व प्रसीतना ॥ मनुष्याणां यद्वा कृते शान्तिं वा कृते शान्तिं वा कृते ॥
नरेणागता येन विप्रस्येन येन विप्रस्येन येन विप्रस्येन ॥
कोऽप्येतादृशमा आशु रसाका दश दशो दृश्य ॥ ६२ ॥
पुत्रपौत्रसमाकृतिमिदमसमाकृतं ॥ आकाशे हि प्रचुषा
पुण्याश्च न पश्यन् ॥ ६० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
विप्रमयां को वा पश्यन् ॥ ६० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
इत्यमृतममुं ॥ ६० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ६० ॥
॥ ६० ॥

॥ ६० ॥
॥ ६० ॥

॥ ७१ ॥ सर्वे रमा को दुलो स्त्रिरु होत सथ स्वाही न भया धन को क्या प्रेम
जन द ॥ ७१ ॥ कुस्त्रि हती कुदु स्वानी कु पुत्र कुल हो न्यते ॥ कु मं
त्री ह न्याते राजा रायु चै रेण ह न्याते ॥ ७२ ॥ कुच विवस्त्रिले कुदु स्व
को नाश ग छि न कु पुत्र ले कुल को नाश ग छि न कु मंत्री ले राजा
को नाश ग छि न चौ लाग्प प छि देश को नाश ग छि न ॥ ७३ ॥
स्त्री शां दोष सह श्राणि गुण स्त्रिणि म ही पते ॥ गृह चार
सुतो त्पनि माणो पसी ना सह ॥ ७३ ॥ स्त्री का दोष सह श्रद्ध न

॥ चानक ॥

॥ ४० ॥

गुणा स्तितीन छ कया कया भन्या बरको रस्या गुण गनु दो पाउ
नुस्वामी सित सीति जानु ॥ ७३ ॥ कवय की न्न पस्पतिः की न्न भक्त
ती वा यशा ॥ प्रमदा की न्न बद्ध ती किन्न जल्यती मध्यपानू ॥ ७४ ॥
कयी हर ले न देखा का कया छ का गले न बाधा को कया छ खि प्ररुष
क्या पो गै न न म तु बाला ले क्या पो बो लै न न ॥ ७५ ॥ पुत्र प्रयो
जन भाय्या पुत्र पि राउ प्रयो जन ॥ हीत प्रयो जन मि न सर्व मात्म
प्रयो जन ॥ ७५ ॥ दोरा कानी मीति स्या स्ती तुल्यार्तनु आ फु फन

॥ राम ॥

॥ ४० ॥

बीरगजनुनानी मीनपुत्रतुल्या उनुगानो सानीनीमीनमीनतुल्या
नु आफनानी मीन सदै ईष्टमीनतुल्या उनु ॥७५॥ समुद्राभर
ण मूमीः प्राकारा भरण गहा ॥ नरेन्द्राभरणदेशाभरिन्नारणा हिवय
॥७६॥ समुद्रको आभरण मूमीहो घरको आभरण पयाल हो राजा को
आभरण देश हो स्त्रिको आभरण नारि हो ॥७६॥ नगर नीनवास
नीन प्राकारानी शक ॥ नखर्व जो नैवर्व धो का सु सिला च कुल स्थि
ये ॥७७॥ घरको धनको पयाल ले मात्र ऊर्द्ध देन दाज्यू माइले पनीर

॥ बुद्धिचा ॥

॥ ४९ ॥

आगन सत्तै नवाधीकनपनी रक्षा दूटैनी स्थि अवधी या शिल सो वभाव
ले मात्र अक्षाई छन ॥ ७७ ॥ नदि पाता पते कुल नारि पातये ते कुल ॥
नारि रौचनदिनांच स्व छन लली तो गती ॥ ७८ ॥ नदिले आफनु तीर
भक्ता उछन स्थिले आफनु कुल को नाश गर्छन नदिर स्थि ऐकै छन ॥ ७९ ॥
लता पास्वे विसत हक्ष मत्प पा अवस्थितं नृप ॥ पा अवस्थिं पुरुष यो धीह
वृयंती न शंशय ॥ ८० ॥ लहराले आफनु नजी को का वक्ष समा छ राजाले
आफनु नजी क को सेवक नी को मान्छ नः स्थिले आफनु नजी क को पुरु

॥ राम ॥

॥ ४९ ॥

बनी को माँह ॥ ७२ ॥ नैव पशंती जातौ धकामान्धानैव पशंती ॥ न प
शंती मदेत्माज्ञा अर्थिदोषो न पशंती ॥ ८० ॥ जनू मूको कनु पनी कहि दे
ष दैन कामातुर पनी कोहि देष दैन अहंकारि मानी सुले पनी केहि देष दे
न दोष हुन्याले पनी कोहि देष दैन ॥ ८० ॥ जिण मत्त प्रशस्यती भार्या च गत
येन वै ॥ एणत्प्रत्यागतं शरीरं स्य च गृहं मा गते ॥ ८१ ॥ अन्न वा पाको पच्य
को नी को वै सजौ मन मया का स्त्रिनी को सग्रादेवी घर फर्की आपा को
नी को अन्न घर पस्या को नी को ॥ ८१ ॥ लक्ष्मिलक्ष गहिने च कुल हिन सरस्व

॥ यानक ॥

॥ ४२ ॥

ती ॥ आपात्रे र मते नारि जी रो व र्च ती वा स व ॥ ८२ ॥ लक्षेण नहु न्या मा नी स्के
ल क्षि म हि न ई कु कु ल हि न भ या की सी त व स्या की ल क्षि म च रि या ज्ञा त मा त य
भ या की स्त्रि ई नु ले प द्वा र मा पा नी प न्या जे लो क्य ब हो ॥ ८३ ॥ य स्य भा र्ग्या वी रू पा
की क स्म ली क ल ह पि ये ॥ उ त्ति रो न्ना र्वा दि च सा ज रा न ज रा ज रा ॥ ८४ ॥ ज स्कि
स्त्रि वी रू प को ह स र्धे क ल ह ग न्या प्र ती उ त्ति र ग र्वा ति स्के लो ज न्या चो डे कु टो
ह इ ह ॥ ८५ ॥ य स्य भा र्ग्या स्व रू पा च भा र्त्ता र म नु ग मी नी ॥ नी त्मै म धु र भा
वी च स श्री या न श्री या श्री या ॥ ८६ ॥ उ स्के स्त्रि रा मि ह न् प ह स को व च न

॥ एम ॥
॥ ४२ ॥

मान्यादिनकोदिनमिबोवचनबोलन्यायेस्तालाइस्त्रिमन्नु ॥ ८४ ॥ यस्यभा
र्यागृहेनीत्यंशुनीवपरिगतीति ॥ तस्यशिदंतीगात्राणिपद्मिनीवहिमाग
मे ॥ ८५ ॥ जस्किस्त्रिप्ररुखकनककरलेभुव्याजलोकएउद्धेतकोप्ररुख
वंसंततुमाकमलसुक्वाजलोसुकदेजान्छ ॥ ८५ ॥ यस्यभार्यागृहे
नित्यंमातेवहितकारिणि ॥ वद्धेतेयस्यगात्राणिपुक्कपक्षेयथाराशि
॥ ८६ ॥ जस्किस्त्रिप्रामालेनीकोगर्दोशेषरुखकननीकोगर्दोतिक्ता
सरिपुक्कलपक्षेकाचइमावठ्ठाशेदीनप्रतावठ्ठदधन् ८६

बुद्धिचा

४३

किं जातैव दुर्भगो पुत्रै शोक सतापकारकै बलमेकं कुलाल म्वि यत्र वी श्र मते
कुलं ७ शोक सतापदिन्याटे रै दे राले क्यार्इ दु कुल को अष्ट को रा ए कै ले
भयापनी हुं ७ एक मा प्यात्र यः पुत्रादे फल लाद शये नवा कन्या
कालाच सोन पिने ते या स्यती विक्रिया ८८ स्वास्मि ये कती ने गा टा को रा
पाच गोती छो रि दुइ हल दश गा इये ति भया का घर मो कै ले पनी वी गा र हुं दे न
८८ एष्ट व्याव हे वा पुत्राग या मे को ये दि व्र जे त्र ये जे त व्या क्त्वे मे धं च नी ल मा
हम मत्स्रे जे त्र ८९ अरे को रा भ या भा ये क छो रा ग या जा ला ग या जा न्या क

राम

४३

नम्रस्वमेधग्रकोनीलोवसाशदानगन्धकोपुण्यपाउरु ८२ ऐकेनसु
व्यवस्थादृष्टमानेनवर्हिना दृष्टेततद्वनसर्वकुपुत्रेणकुलंयव्या
१० सुक्याकाएकवृक्षसमाजोलासर्वेवनडठवुद्वनतसैतैकुसुवधो
गलेकुलमाडद्यालोलेरु ६० ऐकेनीपिसुपुत्रेणपुत्रितैतसुगंधिना
वासिततद्वनसर्वसुपुत्रेणकुलंयव्या २१ एकवृक्षसामुगंधफुलद्व
सर्वेवनमावासपाअउरु - तसै सुपुत्रेलेसर्वेकुलकोउद्वगद्व २१
यस्यापुत्रावासमत्तभापादाद्वगामीनी वीमवेव्यापीसंतुद्वस

आशाक
४४

गतस्य सहितले ६२ तस्माच्छोरकमारकमारिस्वास्ति आपरुनावस्यामा
दन्धनपरीद्धमन्योते समनुष्यको स्तर्गयेहिहो ६२ येषु जालेपीतुर्व
स्यसवीतायस्तुपोषक तस्मिन्वयत्रबीज्यासस्वभाय्यायस्यनीकृती ६
३ वाकुकावस्यमारहत्याकनद्वाराभन्तुः पालगन्धोपोसत्याकनवाकुम
न्तुजसदेर्देवीस्वामगन्धकार ६६ तोमीत्रभन्तु आफुले अहायोकोमी
न्याकनस्यामीभन्तु ६३ यस्य जीवन्ती जीवन्ती बी प्रमी शब्दबीधवा
फलजीवन्ती तस्य आत्मार्थको न जीवन्ती ६४ तस्मात्तीर्तुर्वास्वामा

पम

४४

॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥

मीन बाधवा जा उरुन त्यासानी सजीया को साफल्य हो जीर्णो मनु ते सल
हो २४ सजीवती गुणो यस्य धर्मस्त जीवती गुणधर्मो विहित स्या
नी स्फूर्ति तस्य जीवती २५ गुणधर्मो गुण मनुष्य कन जीर्णो दोह
भन्तु गुणोपनीय धर्मोपनीय न भयाका मनुष्ये लाइ मन्त्रा को भन्तु २५
वाचा सरस्वती यस्य भाग्यी रूपवती सति लक्ष्मी त्या गता यस्य सफल
तस्य जायते २६ जस्का मुखमा सरस्वती क्व धारमा सुन्दरी स्थि क्व दा
न गन सा नव्य को ली त जीया को सफल मन्तु २६ धर्मो व्यक्तो ममोक्ष

शुद्धिचा

४५

य यस्य कोपी न बीद्यते अर्जुनस्वामी नो र्व्यतस्य त्रीवीतं ६७ अर्थ
धर्मकर्ममोक्षयेतो चारमाये कै न तुल्या उन्या म नु व्यती य को ना स्फुल हो
६८ धर्मकर्म बीहीनस्य दिनयाती च बी की य सल हो काल वस्य स्मः
स्वयं चे व प्रतीयेते ६९ धर्मस्य न भया का म नु व को आयु व्यर्थी जी ह को मो
भया का मि हि रु का व स र्हे आ फ र् आ फे फ रि चुर्य हुं ह त लै त्यो म नु व्य को
आयु प नि घटी टै जा ह ७० शत्रो र पि गुणा वा च्छा दो षा वा च्छा गुण र्पी
पूजा यूनं च वा शा स न च्छा च्छा गुण गौ र्वा न् ७१ गुण का कुरा त

राज

४५

शत्रुकोपनी गर्नु दोष का कुरा गुरुको पनि गर्नु कुसमा त गुरुकोपनी
सरमानमान्नु र्हे अर्कत्रयन कसव्य प्राणै कराठ गते रपी कर्त्रव्य
मेव कर्त्रव्य प्राणैः कराठ गते रपी ५०० नगर्न्या का मप्राण कु व्यापनी
गर्नुहे नगर्न्या का मप्राण कु व्यापनी गर्नु नगरि कन को डनु ५००
ईती श्री चानो के शार सै ग्रहे द्वितीये शतक समाप्तः ॥ काले चरि
पुना संचिः काले च मित्र विग्रहं कार्य्य कारण मा श्रीत्य कालक्षे
पनी पण्डित ॥ ५ ॥ वेला हरि शत्रु सित पनी मीलनु पर्व वेला हरि क

गमिचसंगपनीवीरोधगनुयर्द्धकार्याकारणहीरुजिज्ञानीमनुष्यरुहे
समयेहीरिक्कनीदितकारनुयर्द्ध ॥ १ ॥ कालयचतिभूताणि कालसं
हरतेप्रज्ज कालमुपेयुजागति कालोतिरुतीकम् ॥ २ ॥ काल
ले प्राणिपकाउद्धनकालले प्राणप्रतिहरणजय नुसुत्तापनी कालजा
गिरहंक् ॥ २ ॥ कालस्वलोहते काजंफली कालात्पवर्तते काल
प्रवर्ततेअष्टिपुनकालोहिंसहरेत् ॥ ३ ॥ कालैलवीजारेपदकु
कालैलेफलीउक्कः कालैलेसृष्टिगकुंनकालैलसंघारपनिग

गम
४६

कृतसर्वकालहुलो ३ खदिसोभूमि रापश्च चन्द्राक्षनि सारत
सर्वसंहारकालसमाप्तकालो महत्तरम् ४ आकाशदिशा पृथ्वी
चन्द्रसूर्य आग्नि वायु इसवै कालले हरण गच्छन् तसर्व कालहुलो हो
४ किं करिष्यति वक्ता श्रोता यत्र न विद्यते न गच्छेन पनक ग्रा
मेरु क किं करिष्यति ५ क्या गर्तु वीत्या क्या काव च न कोहि
न सुत्मा ठा उ मा केहि लागे न नागा काठा उ मा धो वि को क्या प्रयोज
न ५ कदली वनमा ध्यव्ता कनिही देराक्रम श्रीवेकाज

उद्दि

४७

न सोने गुणवान् कीं करिष्यती ६ केराकावनमाजसै आगाको केहि
वाला गे नतसै आवेवकि मानीसके ३ गुणिमनुष्य को केहिला गे न
६ प्रलेये भिन्न मर्त्यादा भवती कोलसाग्रे सागरे भेदमिच्छती
प्रलेये पिसाधर्व ७ प्रलेये समयमासमुद्रले पनीम ज्यादा छाडु दह
न साधुहरु ताकेले पनीम ज्यादा डेन तसर्थ साधुहुलो ७
मेरु श्रृंखला तीकल्या ते मर्त्यादि सागरस्य च प्रतिपन्न महा सत्त्वान
वीतीकदाचन ८ कल्यांनु मासु मेरुपर्वतपनी अता वंचके नमाहा

एम

४८

पुरुष मात्रै कैलै पनी चंचल कै नर ८ वीयेते स्त्री बुच पला
वीयेते वीर राता तप पारुखी वीयेते नीचे दया साधु बुवीयेते
९ लिखै उंच चंचल डूँक वीर राता के उत्तप स्याई छुनी
चाके उकि चरो वचन ईछ साधु जन के उदयाई छ १
साधु सन्मान मात्रेण भवती दहवी कार्ये उपकार सेम नापी दु
कहा के जहते १० साधु जन के उहात जो निमाव व्याफ ना जी
उमा जप पनी दीन नः दुर्जन क रा सये उपकार ग्या पनी आफु ई

दैन ॥ १० ॥ बुधै को व्या नि शास्त्राणि ना बुद्ध शास्त्रे को धयेत् ॥
 प्रमक्षे च कृते दिपे च क्षु हि नो न प्रस्यती ॥ ११ ॥ ज्वा शि जन
 मा नी स ला ई शास्त्र ले बुजा उनु ई ह मूर्ध क न के हिले प नी
 बुद्ध उनु ई दैन क सो भ न्या पु त क्षे दि जो वाली रा ध्या का य उ मा
 का ना ला ई ल ज्यो भ न्या प नी के हि प्र दे ष दे न ॥ १२ ॥ नारिके
 ल स मा का रा ह श्य ते के पि स र्ज र्ण ॥ अ ये पि व द रा क रा कहि रे व
 मा नो र मा ॥ १३ ॥ स र्ज ह रु न रि व च ल ज स्मा वा हि र ता हो भी व न

कोमलदुर्जग हलकला बाहिर रामो भित्र साहोई छ । १२ चंदन शितल चन्दन
इनेन नुचैदमा चंद चंदनयो मध्यो साधुस परु शितली १३ श्रीचन्द सीतल
चन्दमा पनी सीतल इदुवै ~~सा~~ साधु जनसंग वसनु शितल हो १३ अ
अमाधन मिहंती प्रीती मिहंती मध्यमा उन्नमा मानमिहंती मा
नोती महतो धन १४ अवमि मानी सले धन को ईच्छा गर्छन्
ये मनुष्यले प्रीती को ईच्छा गर्छन् उन्नम मानी सले मान को ईच्छा गर्छ
न् अरु ले धन को ईच्छा गर्छन् १४ माहिका वृषा मिहंती धन मीहं

नीपायि की नीचा कालह मिछी ती शंति सी छी ती सा धव १५ श्री गाले
चाउ को ईछा गद्व नरा जाले कल ह धन को ईछा गद्व न नीचा जातले कल ह को
ईछा गद्व न सा धुन नले शंति को ईछा गद्व न १५ इतर श्रवार्थ सी छी ती रूप सी
छी ती दारिका जात य कुल मिछी ती स्वर्ग सी छी ती ताप सा १६ अरु मनुषे
हर ले धन को ईछा गद्व न तप श्रि स्वाक्षी केरी हर ले रूप को ईछा गद्व न गोत्र
मानी स हर ले कुल को ईछा गद्व न तप श्रि जन हर ले स्वर्ग जाना को ईछा गद्व न
१६ अती के शोन ये ईर्थ अती लोभे न यत्तु र्व परधी ज च पा वृत्ति नैव साधु

४८

४८

मन्त्रे पञ्चमाङ्गिकाः सन्ति त्रयोविंशतिः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

महाराष्ट्री-अकारादीर्घवृत्तः । सायकाद्यादीर्घवृत्तः ।

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

सवैगउमाहुंदैन श्रीरूपनी सवैवन माहुंदैन १६ परकार्ययुक्तामा
स्वाकार्यक्षिप्रसाधयेत् सुहकार्ययुनिवर्ती राजा कार्ययुवीक्रम

२० अर्काकार्यमाजुक्तिगनु आफना कार्यमा बाडे सीध्या ३० नुमिज
का कार्यमा तनुमानु गनु राजा का कार्यमा बीक्रमहुनु ३० जललेखेल
वनीयाना यत्कर्तते नदशयेत् अचलमपी साधूनां सिशालेखे वटीवृत्ति

२१ निचोले गयाको कामपानी साले घ्याको अक्षरज्ञ सो अचीरहो
साधूले गयाको कामहुं गा माले घ्याको अक्षरज्ञ सो चीरहो २१

महतामापदसंती महतामपि संपद इतरैषु मनुष्येष्वापदीवसं पद

२२ वशमानीसकन आपदापनीपद्विनीचामनुष्यकनश्चैव यप

तीद्रुदैन आपदापनीपदैर्न २२ शलुस्तुष्यतीर्वाकोरावशस्वरी
वेषाचंद्रमा ॥ वीस्तुस्मरणामात्रेण महताकसंपुनै २३ अर्कप

३
त्रलेमहादेवशतोयर्हं च वस्तुलेचंद्रमाशतोयर्हं च नृस्मरणले

गकाइछागछन् २५ वजेदुनाविवाशिज्यवीव्याविचवर्ज
श्रुतः ऋतुकालमपस्यावीसातथिनिपतीवजेत् २६ व
नतुल्याउन्यालेवेपारगर्नुवीव्यापन्यालेटेरेशास्त्रहेनुछोरको
ईक्षगन्यालेऋतुकालमासभोगगर्नु २६ सुखेपद्मरलाका
रवाचाचनूनसीतल हृदयेकर्तसंयुक्तंजीविधंभूर्तलक्षणा
२७ कमलकाफुलजलोमुखशीघ्रकाजलोवचनहृदये
मामन्याकर्तिईठातकालक्षणाईन् २७ दूर्जगःप्रियेवादी

चनैववीश्वासकारयेत् मधुश्रवन्ती जीहासे हृदि हारा हलं वी वं
२८ दूर्जनमनुष्येसीतवीश्वासनगर्नुक्यानमन्या जीभामा अ
मृतपेटमावीर्षं हूँ २८ खलसर्वपमात्राणि परहि शशि पश्य
ती आत्मनो विल्वमात्राणि पश्यते पीनस्यती २९ दूर्जनहस्त
आकाको दोषमन्या प्रमानमयापनी देवकुत्र आक्रा दोषवेल
प्रनामयापनी देवदेन २९ दसदिग्वाश्च यो र्वी धनवतश्च
शिर्गुणा दूरस्थेपि च दृष्टेति कीं कुव शुका ईव पुष्टिता ३०

धनभयापनी मूर्खिरगुनी गुणि को शोभाव कस्तो भन्या पलास का
फुल फुल्य जस्तो ३० मूर्खी पि परि हत व्यं प्रत्यक्षो द्वि पद पशु
भिद्यते वाक्य शल्येन अदृष्टं कराठ को यथा ३१ ॥ मूर्खि मानी
सकन छु डिदिनु क्या न भन्या दूई बुदा पशु हो वचरा भन्या वाणा जस्तो
गोशमा भिज्या का का ठा जालो रिकन नई न्या ३२ ॥ सर्प कुल
खर कर सर्पात् करतर खल मत्रौ यथी वसं सर्प खल के नो पशाम्यते
- ३२ मूर्खि मन्दा सपनी को क्या हो भन्या सर्प ता मंत्र ले वस्य गर्नु

ॐ ह्रस्वमूर्ध्वतर्कहिगन्यापनीवृष्टाऽनुसकरेन ३२ हस्तिहस्तसहस्रे
राशतहस्तनवाजीन श्रृंगीनोदसहस्तनदेशत्यागानदुर्जरो ३३
हातीदेखीकनहाजारहाततादाहनुष्याऽदेष्टीकनयहातताका
रहनुसिगालादेष्टिकनदसहातदादाहनुदुर्जरादेष्टिकनदेशत्यागग
नुपक ३३ हस्तिनांकुसहस्तनकडिहस्तनवाजीरां ॥ श्रृंगीलगु
हस्तनवङ्गहस्तनदुर्जरो ३४ हातीकनअकुसदेखीनुष्याऽक
नकोरादेष्टाऽनुसिगालकनलौहोदेष्टाऽनुदुर्जराकनवङ्गदेष्टा

देव न्याषा उनुप १ ३४ इजरा पाहिरुह तव्य शास्त्र शास्त्र लक्ष्मी
यदि मशिनाल कृत सप्य की मसौ न भयंकर ३५ इजरा परि
ह मानी सकुदनु जो पशास्त्र जौ न्या भयापनी तसे देवी दुरा उनुप
क को भन्या मशिनाले मात्र भय नगरि रस्यापनी सय्य दीधको डरा उ
तै न तसे इजरा सानी सकन दानु जो ३५ पात्र पात्र विशेषेण
धनुपन्न गेया यव्या तत्त रागिण अवतेशीरा निश्रवते वीर्य ३६
पात्र कुपात्र को वीचा रादैर हनु को भन्या धास दिई कन गाश्लो

दूद हिन्दु रदुदिकन सर्प लेवी अवदिं कुन् ३६ क्षद्रशत्रुमिती सत्ता
नोपेक्षत कदाचना काले दुर्जगमायांती तरास्यावन्निजीववन्
३७ शत्रुसात्रुकुम्भनी अनादरगर्भुकेन औसरपन्पा पकिनाशगवन्
जसो मुक्या कोद्यास परालमा आगोराघदा चैड सल्ककुतसैसत्रु ले
पनी आगो सल्कई कुन् ३८ वीष्टे के करे के दोषा असो सी मधुपि
गल शतकारो चषाडेच अकुन् जस्योत न विद्यमे ३९ इत्येव
उसादोष ईक कैला आघावे उअसिदोष ईक रकोनाकोरु जक

उसयेदा यहै छत्रकुआके उच्चतस्त्रे ३८ स्त्रानकृतेदुराचारेमैत्रसे

हपरित्यजेत् वीश्वाससमयकार्यविनासमुपगाच्छती ३९

गाउमावस्थाकाकपटिदुराचारिसीतमीत्रभावसेहछादतुपक्ष

कानभन्यावीश्वास गये भन्याकेहि कार्य भयापनीतासगली

३९ मइनेवमदुहंती मइनाहंतावरुण नासध्यमदुनाकी

चित्तस्मातीक्षणातरोमदु ४० कमलालेसाहो काननास

गवर्कमलोवोधगडुहं देन कमलालेनसक्याको कामकेहि

छेन ४० वनैप्रज्वालितो वहिरहन्मूलानीरक्षतीः समूलमन्मू-
लयती आपौषामदुशीतलं ४१ वनमा आगोलाग्वा पक्षिरुष-
को तजरो रहंछु पानीले तजरे स्मृद्धा उषेलीले जाच्छु तसर्थक वलादेवीद-
रा उनुपछि ४१ सुलरोमावली कद्वकंन्या चव दुभाषिणी उषराणि
चक्षेत्राणि दुरतः परिवर्जयेत् ४२ दुलारौ भया को गोरु वहुत कु रागय-
यी कीरो लाग्या येते येती थोकरा छे देवी छोडनु ४२ रहस्यं भेदपेभ्रुन्य
परदोषन कीर्तने कलहप्रकृती त्रैव दुरतं परिवर्जयेत् ४३ मित्रागुप्तका

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ २ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ३ ॥
 द्रुपद उवाच ॥ ४ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ५ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ६ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ७ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ८ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ९ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥

४५ नवीश्वास्यदमीत्रस्यमीत्रस्यापिनवीश्वासेत् कदाची
त्कुपितोमीत्रसर्वशुर्लप्रकासयेत् ४६ शत्रुसीतपनीवीश्वास
नगर्जुमित्रसीतपनीवीश्वासनगर्जुक्यानमन्याकराचीत्मीत्रसीत
वीधमयाकादिनसैवगुप्तमयाकुराप्रकाशगर्ला ४७ नवीश्वास
स्यसदवीश्वासेवीश्वासनेवविस्वसेत् वीश्वासाभयमुत्पन्नमूलाने
वैनिरुतति ४८ अवीश्वासीसीतरवीश्वासीसीतकैलेपनी
वीश्वासनगर्जुः कसोभन्यावीश्वासगयावादिभयेऽत्यतर्दुह

४७ नदिनीचनरवीनीचश्रीणांशास्त्रधारिणी वीष्वासने
वकर्त्तव्यस्त्रीपुराजकुलसुच ४८ नदिसितनखभयाकासीत
शास्त्र ईन्यासगवीरमीस्त्रिमीतराजकुलकासीतस्त्रीसीतवीष्वा
सनगर्नु ४८ नदितीरेषुप्रोहृक्षायाचकंन्यानीराश्रया सास
त्तरहितोराजानभवतीचीराश्रय ४९ नदितीरकोवक्षआधारनभ
याकोस्त्रिमंत्रिनभयाकोराजाटैरेवाचरेन ४९ यदिछेत्सास्त्रतपी
तीचीराणीतत्रनकरयेत् धुतमर्थप्रयोरावपरोक्षदार्दशीणां ५०

हरै सम्प्रति रहे सभं न्यालेतीन भोक नगर्नु जुवाने खेल नुदा मनभा
लाउनु स्वाक्षी सीत एकान्त नवहनु ५० नगछे दृष्टवी श्वासं न

कृप्या रकुल वी ग्रह आत्मनो पीत थाकोट मीच वैरं नकारयेत्

५१ दुष्ट संग वी श्वास नगर्नु कुल लेख गरा नगर्नु रिसा हा नई नु

मीत्र संग वी रोध नगर्नु ५१ कुनयो मन्त्रि राजा न द्वि वी द्रु चो विष

लीयति पव्र जीतं व्रत मरुत सेवती सरा बुधै ५२ अन्याय

गर्न्य मन्त्रि को राजा सेवा वेस्या स्त्रिको पाई व्रत भंग मया का संन्या

कपनी ऊदेन ५४ द्वौ विप्रौ वीर्यमग्निचंद्रपत्न्यो युरुशिष्ययो
अंतरनैवगतव्यहरस्य वृषभस्य च ५५ दुईवाण्डसरा कश्च
तरवाट अरुंवा स्त्ररा का अंतरवाट स्तिपुरुषका अंतरवाट गुरु
कोरसिष्यका अंतरवाट माहोदेवा वसाहा का अवाट तरवाट येती
का अंतरवाट जानुछेन ५५ लोकयात्रा भयलज्जारक्षिराप
त्यागशीलता पंचयवनवीर्येन कुप्यात्तत्र संगती ५६
जस्रठाई मा जा वा छेन तस्य स्यात्त्याभया कारेश मा दा वपुसील

[illegible]

रखिये निशामै मनुमालस्य सेवते तीह वधैते पर फिकिगर्ज कलह गर्जक
गर्जनु मद्यपान गर्ज परस्त्रिगम न गर्जु निशामयुन आलस्य जती वडा येउ ती
कलह वधुन पर परदार परस्त्रिच परवार परस्यच परिहास्य गुरु रथाने यत्तत
परिभगैयेत् ६० परस्त्रिगमरा अकी कोधन की को चुकि गुरु रथे उहास्यानु से
तोयो क छोटनु पई ६० परोक्ष कार्य हंतार प्रत्यक्ष प्रिया वादिन वर्जयेत्
हसि मिच वीच कुभय दोसुख ६१ कैदा परिका जहाँ न्यासुर व्याजि मिथो जा सि
बोलन्या वल्लो मित्र वछा शिरिनु वसोभन्या वीच का घडा माथि वाट दुदहास्या

जलेहो ६१ कुदेसं वकुपति चकुर्माया कुनरितया कुरुपति
मोज्या चवर्जयेत्याहिलसर् ६२ कुदेसकुपति कुनरितया
स्थीः कुईव कुअन्नेयती थो क जाना लकोठिलसर् ६३ कुवर्सी
येहेपेरा रम्मायेदितीलोत्तमा मो काली सेलका चवर्जयेत्या
परस्त्रिया ६३ स्वास्त्रिराष्ट्रमा अक्की हंमारी लोत्तमा गो वली
मेराका जला अयसरजा लसमाययापत परस्त्रिया उपर
६३ येषु कायेषु सहासावी कलेय्य कुरुपति कुनरितया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥ २ ॥
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥ ३ ॥
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥ ४ ॥
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥ ५ ॥
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥ ६ ॥
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥ ७ ॥

करोतीचा न्याये सरांग कस्य जायते ६८ आमाले दीवरायीसु
वा उदावा बुलेवेची पठा उदा राजाले अन्माय गर्द को नसित सर
राजानु ६९ यत्र राजा स्वयचोर समीची सपुरे हित तजह
को करि व्यामी यतोरस्या ततो भय ६९ राजा आपै चोरभ
या को देस मा मंत्रि पुरे हित चोरभया पछि त्वा ठा उमा सर्जन
को क्याला ग्द जाहारस्या ताहा भय ६९ विधाता लीखिता
यस्य लसाते क्षर माली का रैवोपि न हि शक्योती सलीरव्य

लीखित पुन ७० वीधा तोले आफनाल। लाट माले ये को अ
सरदेवताले पनी मेरि कन फेरिले वन सत्तैन ७० कर्मणो हि
प्रधाने न बुद्धि नां की प्रयोजन . पाया न स्प कु तो बुद्धि से ने दे
बो भवी मे ती ७१ कर्म दुलो हो बुद्धि बु लो हो इन क्या न भ
दुगा को क्या बुझी छ ते स क ने देवता भनी पूजा गर्ह न त सर्व
कर्म भन्या को दुलो हो ७१ कर्म एय पि प्रधाना सी सान्निह
ये बु मे ग्रहे . वशिष्ठ दत्त ल मे पि जान कि दुःख मा गी रा ७२

कर्मममालेखाको असरये सो ऊँ छ क्य हो भन्या नु भवेला पारिक
नवसिष्ठ अखिले लग्न दिव्या रपनी शिताले डख पाया ७२ सा नु
कुले भवेत्तस्त्री न दोषो पी गुण सहती : गुरो पी दोष ताया ति वी कि
भूते वी धातरी ७३ अनुकुल वे सद्गता मा दोष पनी गुण डँ छ वी
धाता च क दुता मा गुण पनी दोष भै जान्छ ७३ किं करोती नरः प्राप्ता
प्रेसमान स्व कर्माभि प्राये नै वहि सुखा रणा बुद्धि कर्मा नु सारिः
णी ७४ मनुष्ये को कर्म भया लेर बुद्धि ग्यारि भया ले क्य गर्ज

॥ राम ॥

६२

कर्म का अनुसार ले घुमा ईद्विन् कर्म का अनुसार ले मुख भयाप
निवृद्धि ईद्वि ७४ हस्त स्पभूषणार्थन सत्प कण्ठ स्पमुखर्ण
कतचभूषण कर्णभूषण की प्रयोजन ७५ हात को शोभा
दानगुर्नुगला को शोभा सत्पवालजु कान को शोभा धर्म कव्यासु
नुगहना लाया ले क्या प्रयोजन ७५ चरित्रभूषण स्त्रिण
दुमाणा पुष्पभूषण स्वसती भूषण पूसी पतीनी भूषण कृपा
७६ स्वामी को गहना सु चरित्र हो रूष के ^गहना फूल हो सु

रुष का गहना सुश्रुति हो स्वामी को गहना रखा हो ७६ नक्षत्र भूष
ण च इ नारिणी भूषण पीती : पृथिवी भूषण राजा श्री ल सर्व व पु
भूषण ७७ ता ए को गहना च इ मा हो. स्त्रि को गहना स्वामी
हो पृथिवी को गहना ए मा हो सर्वै लोक को गहना श्री ल सो भाव हो
७७ महतापी हर्त श्रेष्ठ न नि चामान मुत्तम की सली पादुचा
तन काली ये स्ववी भूषण ७८ दुलो के उ अपमान भया पनी
निको नी न्या ले मान गया को पनी ननी को क्या न भया श्री कृष्ण

ले काली नाग को शीर मा पाई पर्ना ले काली नाग को शोभा भयो
७८ अचिभूमि गत तो य अची नीरि प्रतो प्रता अची से मा करो
एजा सतो यो वा ह्मरा भुची ७९ पानी भया को भुमी शुची प्रती
वाता स्थि शुची से मा वत्त राज सुची सप्त तो य भया का वा ह्मरा भु
ची ८० अचिभूमि गत तो य यत्र ले पो नवी यते लप स्थाने य
रित्य ज अन्य स्थाने शुचि शुची ८० लीप्या को नभया को भया
पानी भया को भुमी शुची वज्रा को पनी शुची आफ्ना ना ठाई मा
वर्षा को पानी पनी शुची ८० प्रस्माना सुद्ध ते काशी ताम्र
आश्वेन सुद्ध ती रजसा सुद्ध ते नरि नदि बेगै न च यते ८१

घण्टिलेकशो सुद्ध ईरु तासा अमीलाले सुद्ध ईरु रजशोला
 भयापनीस्थि श्रुवी ईरु नदिवेगले गया को नदि सुद्ध ईरु ८१
 पीतुरत्तपुरं दद्यात्मा तूर्दद्यात्महासर्गं गोषचात्मसमं दद्यात्स्व
 येमेव कृषीवृजेत् ८२ पीताको अर्तिलीउमाताको भासा माः
 घातुगो रुको जीउं अत्तजि ईयकमानु आपुरले ये तीक माईगनु
 ८२ कपीलाक्षिरपीरो नवाक्षणीगमनेनचः वेदरक्षरवीचा
 रेणशमूडोनरकैवजेत् ८३ कैलिगाईको इदमान्यावा
 ह्मणिसेग प्रसंगगन्धवेदको अक्षरवीवागन्धो भुङ्कन
 नर्कजा न्ध ८३ अहिहले नयो भुङ्कमासमेकनीरंतरं

जीवमानो

शिउतगति

दैश्वर्य

प्राना

हि

प्रायते ८४ ब्राह्मणलेख

कोहातवाटखायाजीउ

८४ स्तनहिनीतु

नमलंकारवीद्याहीनो

लेखिउनभयाकोभोजन

जशाहव्यर्थहोशोभाइहैन

शोभतेतपसायुते

८६ कलमाकमलकोशोभाइकज्ञानीतपः

८६ यज्ञात्सवचवी

असूरोद्याउलेशोभाइक

प्राणमुखाणीकलहोत्सवं पुरुषोत्सवं च नारिनाजवानाचत रोगात्स
 ५७ ब्राह्मणकारुत्साहजज्ञहोमगर्भमुर्धको उत्साहकालहर्ग
 ५८ तको उत्साहपुरुषको सेवागनुगाईको उत्साहकमलघास ५९
 अग्निहोत्रफलवेदशीललक्षतिफलं श्रुते ॥ रतीप्रवृत्तफलानारि
 दत्तभुक्तरफलधनं ६० वेदकोफल अग्निहोत्रगजप्रणामसुखा
 कोफलशिलवहद्वारास्त्रिसंभोगयाकोफलप्रवृत्तहनुधर्मको
 फलदिनुषानु ६१ अग्निदहती पापेनसुर्योदहतीरस्मिभि
 राजादहतीवापेनतपस्याबालरादहेत् ६२ आगकारापले
 पोल्हसुर्योका ६३ पोल्हसुर्योका ६४ आकादराडलेपोल्हवाष्म एका

तपस्यालेपोल्ल ८६ सनशाकमृतमासकरणमयीतंदधि
तर्ज्यादत्तवर्षचचतुल्यगामासभोजनं ८० नालकोटुपोह
तलमण्याकोदहितजगिहोदातदोदत्तयेतीयोकोगोमासंतु
ल्यल्ल ८० नईन्यान्ममतिंदयात्तुह्यमानसदृश्यते : अयश
कोपरित्यजेत्भक्षमासंयुधिस्थि ८१ आफुलेनकाटु
कातमनिवचनदीउकायाकोनहत्तयेतीतीयोकाकोछा
डिकनछोडिषाउमनिपुधिस्थिराजालेभनिगयाकोपाप
लाजैसा ८१ नमीसंभक्षेनेदोषनमघनचमैचुनं प्रवृत्ति
खभूतानानिहतिस्तुमहाफलं ८२ मायुषायाकोमदपानगय

॥ को मै बुन गन्ना को पापताला जे रा परतु छे इउस को भन्या मः
 हाफल हूँ ६२ चतुरशागर पर्यन्तो यो दद्यात् पृथ्वी वीमीमं नखाः
 देना पीयो मास तुल्यमेतद्दिद्वेधा ६३ जोम सुखा देन चारस सुद्धमि
 ३ को पृथ्वी वीरान गन्ना को रमा छा मा सुन सा के ले वरा वर प्रणय पाई
 ६३ अग्निरापस्त्रियो मूर्धा सूर्य राजकुलानी च नित्यमेव
 पचोरेण सद्मा प्राणहराणि घट ६४ आगो मयो पानी भयो स्त्रि
 भयो भूर्वि भयो राजा भयो सूर्य भयो इनले सदा पाउपचार गरिकन प्राणा ह
 रण गछने ६४ सुवका मास स्त्रियो रुद्रा बाला कलसरोरधि प्राभाते
 मै बुन निडा सद्ये प्राणहराणि घट ६५ सुखा को मा सुद्धि स्त्रिवेष

नको घास पावे रसि वीरानको मै बुनये तीबो कले चाडे प्राण ह
रण गच्छन् ८५ सद्यसमासं च तस्यै कालास्त्रिस्त्रिभोजनं
उत्तेरकं तस्मात् प्रास पा प्राण करणि वट् ८६ आलोमासु सा जीवा
धी उत्तरुणि स्त्रिदुर्भातस्त्रवको व्यासा तीतो पाणि ये तीबो कले चाडे
प्राण वज्जु ८६ आनाद वृत्तं पृष्ठं चोत्तरुणं पय पयसो
वृत्तं मासं मासाद वृत्तं ८७ अन्नचाहि आठ गुरा रोटी मासु
हेटि चाहि आठ गुरा दुग्मासु दुग्चाहि आठ गुरा मासु मासु
चाहि आठ गुरा धिर्मासु ८७ पंचयव दीन शपती स्त्रवो लुद्ध सो योन
नर अतिमाणि च कामी च गुरा देवी तयो वच ८८ ये तीपाच जना को

चाहे नासकछ अतिलोभा ऊई कारछि नरा गुरुको नीशगर्मी
६ गोभिविष्वक्वेदैश्वसतीभिसत्यवादिभी अलुदैदानशीलैश्व
सत्तभीर्दायतेमहि ६६ गाईवाह्मणसतीदेवसत्यवादिआलोभीरा
ताईनहरुसातजानाहैपुर्विधारणागरिरह्याकोछ ६६ असारे
पीहिसंसारेसारमेतचतुस्य काशयवाशःशतांशगोगजार्भशुपुः
जने १०० सोससारआसारहोसारभत्याकोचारयोकरछका
क्याभन्याकाशिवाशगुसर्जनशंगवसुजंगामादिनप्रतीह्यानगुनु
महोदेवकोपूजागुयेतीचारयोकरशारछ १०० एमणको
इति श्रीचानकेकारसंगेहृतीयेसतकसमाप्रभमो शुभम्

जलोहो ६१ कुदेशं च कुशति च कुमाय्या कुनरितया कुश्यं च कुमोज्या
चवर्जयेत्यण्डितः सदा ६२ कुदस कुशति कु काम कु चरित्रस्त्रि कु इव कु च
नयेति व्योक्ता नीलेच्छा डिहा लनु ६२ उर्वशी येति रूपेणारम्भा यतिनीलोत्त
त्तमा गोपाली मै न का चैव वर्जनीया परस्त्रिया ६३ स्वाक्षिरा मोमा उर्वसि
रभाती लोत्तमा गोपाली मेरा का जला अयसरा जलिरा मोभया यनी परस्त्र
छाड्य पद ६३ येषु को येषु वीद्वेषु सहासा विफलोदय वीपत्नीषु महादा
नापरिवर्जे दिचक्षरा ६४ आफ्फाले आरिगया को काय आ काले हानर

श्री गणेशाय

सा

सा

राना रागय

रामराम रामराम

五

श्रीगणेशायनमः

श्री गणेशाय नमः

५२

१॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशायनमः

प्रपोरोयन्

पुस्तकालय

2267

ASMA ARCHIVES